

# समकालीन हिंदी कहानी में वृद्ध-उपेक्षा का यथार्थः पारिवारिक द्वंद्व और संरचनात्मक अवदान

डॉ० पवन कुमार त्रिवेदी

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत

(एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली)

**शोध-सार:** प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन हिंदी कहानी के संदर्भ में पारिवारिक उपेक्षा झेल रहे वृद्ध पात्रों की दोहरी भूमिका का आलोचनात्मक और आख्यान-शास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सामान्यतः वृद्ध-विमर्श को केवल समाजशास्त्रीय विषमता या करुणा-उत्पादक विषय-वस्तु के रूप में देखा जाता है। किंतु यह अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि समकालीन कहानियों में 'वृद्धों की पारिवारिक उपेक्षा' केवल एक सामाजिक यथार्थ नहीं, बल्कि कहानी के 'कथानक-विन्यास' (Plot Architecture) और 'आख्यान-गतिशीलता' को निर्मित करने वाला प्राथमिक संरचनात्मक घटक है। शोध पत्र में यह विश्लेषित किया गया है कि किस प्रकार वृद्ध-उपेक्षा से उपजा पारिवारिक अंतर्द्वंद्व कथानक में तनाव, उत्कर्ष और चक्रात्मक समाप्ति को जन्म देता है।

**कुंजी-शब्द:** वृद्ध-विमर्श, आख्यान-संरचना, पारिवारिक द्वंद्व, संरचनात्मक अवदान, समकालीन हिंदी कहानी, हाशियाकरण, कथानक-विन्यास।

## I. प्रस्तावना

उत्तर-आधुनिक भारतीय समाज में औद्योगिकीकरण, भूमंडलीकरण और आत्मकेंद्रित उपभोक्तावाद के प्रसार ने पारंपरिक संयुक्त पारिवारिक संरचना को छिन्न-भिन्न कर दिया है। इस सामाजिक संक्रमण का सबसे गहरा और दर्दनाक प्रभाव परिवार के सबसे वयोवृद्ध सदस्यों पर पड़ा है। समकालीन हिंदी कथा-साहित्य ने समाज के इस 'हाशिए पर धकेले जाने की प्रक्रिया' को अत्यंत सूक्ष्मता से दर्ज किया है।

अकादमिक अध्ययन के क्षेत्र में वृद्ध-जीवन और उनकी उपेक्षा पर प्रचुर मात्रा में समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक विमर्श उपलब्ध हैं। परंतु, साहित्य-शास्त्र और शिल्प-विधान की दृष्टि से एक बड़ा अकादमिक अंतराल विद्यमान है। अधिकांश शोध-कार्य वृद्ध पात्रों को केवल 'सहानुभूति के पात्र' या 'विषय-वस्तु की सघनता' बढ़ाने वाले चरित्रों के रूप में विश्लेषित करते हैं। "क्या समकालीन हिंदी कहानी में उपेक्षित वृद्ध पात्र केवल सामाजिक यथार्थ के वाहक मात्र हैं, अथवा वे कहानी की आंतरिक संरचना और आख्यान की प्रगति को संचालित करने वाले मुख्य तकनीकी व संरचनात्मक तत्व हैं?" यह शोध पत्र इस मान्यता की स्थापना करता है कि उपेक्षित वृद्ध पात्र कथा-शिल्प के स्तर पर 'कथ्य' और 'रूप' के बीच सेतु का कार्य करते हैं। उनकी उपेक्षा से उत्पन्न पारिवारिक द्वंद्व ही कहानी के तनाव-बिंदुओं का निर्माण करता है।

## **II. सैद्धांतिक पीठिका: आख्यान-शास्त्र और वृद्ध-विमर्श**

प्रेमचंद युगीन आख्यान में वृद्ध की उपेक्षा का मूल कारण प्रायः आर्थिक अक्षमता या भौतिक संसाधनों की कमी थी (जैसे: 'बूढ़ी काकी')। वहाँ पारिवारिक संवेदनाएँ अंततः किसी न किसी रूप में बची रहती थीं। किंतु उत्तर-आधुनिक समकालीन कहानियों में उपेक्षा का चरित्र बदल गया है। यहाँ उपेक्षा भौतिक अभाव से नहीं, बल्कि 'अस्तित्ववादी निरर्थकता' और 'संवादहीनता' से उत्पन्न होती है। आख्यान-शास्त्र की दृष्टि से, वृद्ध पात्र कहानी में 'उत्प्रेरक' की भूमिका निभाते हैं। उनका मौन, उनकी उपस्थिति, या उनकी अस्वीकृति कथानक में एक ऐसा नैतिक और विचारात्मक असंतुलन पैदा करती है, जिसे हल करने के प्रयास में ही पूरी कहानी आगे बढ़ती है।

## **III. आख्यान-संरचना में संरचनात्मक अवदान**

अकादमिक और रूपवादी दृष्टि से किसी भी कथा-कृति की संरचना में पात्र केवल सामाजिक यथार्थ के वाहक नहीं होते, बल्कि वे आख्यान की गतिशीलता को निर्धारित करने वाले प्रकार्यात्मक घटक होते हैं। समकालीन हिंदी कहानी में पारिवारिक उपेक्षा झेल रहे वृद्ध पात्र आख्यान-शिल्प को निम्नलिखित चार संरचनात्मक स्तरों पर शक्ति प्रदान करते हैं:

## **IV. द्वंद्व के उत्प्रेरक के रूप में**

कथानक के विकास के लिए 'असंतुलन' का होना अनिवार्य है। वृद्ध पात्र का परिवार में होना और उसका उपेक्षित/तिरस्कृत होना कहानी के मुख्य पात्रों (पुत्र, बहू, पोते आदि) के दैनिक जीवन में एक सतत तनाव निर्मित करता है। वृद्ध का मौन, उसकी खाँसी, उसकी शारीरिक अक्षमता या उसकी उपस्थिति मात्र—नई पीढ़ी के स्वच्छंद और उपयोगितावादी जीवन में एक नैतिक हस्तक्षेप की तरह कार्य करती है। यही तनाव कथानक को आगे बढ़ाने वाला मुख्य इंजन बनता है।

## **V. आख्यान का स्थानिक पुनर्गठन**

समकालीन कहानीकारों ने वृद्ध-उपेक्षा को दर्शाने के लिए 'स्थान' (Space) का बहुत बारीक प्रयोग किया है। घर का ड्राइंग रूम (जो मुख्य और प्रदर्शनकारी स्थान है) नई पीढ़ी और मेहमानों के लिए होता है, जबकि वृद्ध पात्र को घर के अंतिम कोने, स्टोर-रूम या बालकनी में 'विस्थापित' (Displace) कर दिया जाता है। यह स्थानिक विभाजन आख्यान में केवल एक दृश्य निर्मित नहीं करता, बल्कि कहानी के आंतरिक और बाह्य द्वंद्व को भौतिक रूप प्रदान करता है।

## **VI. चरमोत्कर्ष का नैतिक निर्धारण**

कहानी का चरमोत्कर्ष प्रायः तब घटित होता है जब वृद्ध पात्र की उपेक्षा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है। इस बिंदु पर आकर कहानी का मुख्य पात्र (पुत्र/बहू) या तो आत्म-ग्लानि से भर जाता है या अपनी संवेदनहीनता के चरम को छू लेता है। इस प्रकार, वृद्ध पात्र की उपस्थिति कहानी के नैतिक बिंदु और चरमोत्कर्ष को दिशा देती है।

### **VII. चक्रात्मक एवं संरचनात्मक समाप्ति**

कथानक की परिणति या अंत में वृद्ध पात्र की भूमिका निर्णायक होती है। वृद्ध पात्र का घर छोड़कर चले जाना, उसकी मृत्यु होना, या उसका पूर्णतः मौन हो जाना—कहानी को एक संरचनात्मक पूर्णता प्रदान करता है। यह अंत पाठक के मन में एक गहरा विचार-उद्वेलन छोड़कर कथा-वृत्त को बंद करता है।

### **VIII. प्रमुख समकालीन कहानियों का पाठपरक व आख्यान-शास्त्रीय विश्लेषण**

उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी': स्थान-भ्रंश और आख्यान का चक्रात्मक विन्यास

उषा प्रियंवदा की कालजयी कहानी 'वापसी' सेवानिवृत्त होकर अपने घर लौटे गजाधर बाबू की पारिवारिक अप्रासंगिकता और भावात्मक विस्थापन की मर्मस्पर्शी आख्यान-कथा है। सेवानिवृत्ति के पश्चात जब गजाधर बाबू अपने परिवार के बीच एक स्थायी जीवन जीने की आकांक्षा से लौटते हैं, तो परिवार के सदस्य उन्हें एक स्नेही अभिभावक के रूप में स्वीकार करने के बजाय अपनी स्वच्छंद दिनचर्या में 'अवांछित बाधा' और 'अतिथि' मानने लगते हैं। इस कहानी में वृद्ध पात्र की उपेक्षा को अभिव्यक्त करने के लिए कथाकार ने 'स्थान' (Space) का अत्यंत बारीक और प्रतीकात्मक उपयोग किया है। गजाधर बाबू की चारपाई को अंदर के कमरे से हटाकर पैसेंजर यानी गलियारे में डाल दिया जाना केवल एक भौतिक व्यवस्था भर नहीं है, बल्कि आख्यान-शास्त्र की दृष्टि से यह उनके भावात्मक और सामाजिक स्थान-भ्रंश (Spatial Displacement) का दृश्य-रूपक बन जाता है। गलियारा वह स्थान है जो न घर के पूरी तरह भीतर है और न बाहर, ठीक उसी तरह गजाधर बाबू भी अपने ही घर में हाशिए पर ला पटक दिए जाते हैं। आख्यान-संरचना के स्तर पर उनकी यह उपेक्षा और उससे उत्पन्न घुटन कहानी को एक निश्चित परिणति प्रदान करती है। अंततः गजाधर बाबू द्वारा पुनः एक चीनी मिल की नौकरी स्वीकार कर अकेले शहर लौट जाने का निर्णय कहानी की संरचना को एक चक्रात्मक रूप (Circular Narrative) प्रदान करता है। गजाधर बाबू जहाँ से चले थे—अकेलेपन और अलगाव के जिस बिंदु से उनकी यात्रा आरंभ हुई थी—कहानी का अंत भी उन्हें उसी धरातल पर लाकर छोड़ता है। यहाँ वृद्ध पात्र की पारिवारिक उपेक्षा आख्यान के पूरे ताने-बाने को समेटने और कथानक को तार्किक परिणति तक पहुँचाने वाली मुख्य धुरी का कार्य करती है।

### **भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत': विडंबना, व्यंग्य और आख्यान-तनाव**

भीष्म साहनी कृत 'चीफ की दावत' मध्यवर्गीय स्वार्थपरता, दिखावे की संस्कृति और वृद्ध-उपेक्षा का एक तीखा आलोचनात्मक पाठ प्रस्तुत करती है। कहानी का मुख्य पात्र शामनाथ अपने अमरीकी चीफ को प्रसन्न करने और पदोन्नति पाने के लिए अपने घर में दावत का आयोजन करता है, जहाँ उसकी अनपढ़ व बूढ़ी माँ घर की व्यवस्था में एक 'अनुपयोगी और भद्दी वस्तु' के रूप में देखी जाती है। यहाँ माँ को छिपाने और एक सजावटी सामान की तरह प्रस्तुत करने की प्रक्रिया के माध्यम से उपेक्षा के बहुस्तरीय यथार्थ को उघाड़ा गया है। उन्हें निर्देश दिए जाते हैं कि मेहमानों के सामने कैसे बैठना है, कौन-से कपड़े पहनने हैं और किस समय सो जाना है। आख्यान-शिल्प की दृष्टि से बूढ़ी माँ पूरी कहानी में एक प्राथमिक 'तनाव-उत्पादक घटक' (Tension Generator) की भूमिका निभाती हैं। जब तक दावत चलती है और चीफ माँ के आमने-सामने नहीं आ जाता, तब तक कथानक में एक निरंतर नाटकीय आशंका और तनाव बना रहता है कि कहीं माँ की उपस्थिति शामनाथ की बनाई छवि को बिगाड़ न दे। कहानी का चरमोत्कर्ष (Climax) तब एक अत्यंत व्यंग्यात्मक मोड़ लेता है जब अमरीकी चीफ माँ द्वारा बनाई गई पारंपरिक 'फूलकारी' की प्रशंसा करता है। चीफ की रुचि देखते ही पुत्र का व्यवहार अचानक बदल जाता है और वह अपनी स्वार्थी सिद्धि हेतु माँ से पुनः

फूलकारी बनाने का आग्रह करता है। यहाँ उपेक्षित माँ की स्थिति कहानी के चरमोत्कर्ष को निर्मित करती है और मध्यवर्गीय क्रूरता व विडंबना (Irony) को आख्यान के केंद्र में लाकर खड़ा कर देती है।

### **प्रियंवद की कहानी 'खरगोश': उत्तर-आधुनिक संवादहीनता और आख्यान का ध्वन्यात्मक मौन**

उत्तर-आधुनिक दौर में एकाकीपन और उपेक्षित वृद्ध-जीवन की दार्शनिक त्रासदी को प्रियंवद की कहानी 'खरगोश' अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरती है। इस कहानी में वृद्ध पात्र की उपेक्षा किसी सीधे तिरस्कार, गाली या आर्थिक वंचना के रूप में सामने नहीं आती, बल्कि वह 'पूर्ण संवादहीनता' और भावात्मक अलगाव के रूप में प्रकट होती है। नई पीढ़ी के आत्मकेंद्रित और तीव्र गतिमान जीवन में वृद्ध पात्र पूरी तरह अप्रासंगिक हो जाता है। आख्यान-शास्त्रीय दृष्टि से वृद्ध पात्र का यह संवादहीन होना और घर के एक एकांत कोने में सिमट जाना कहानी के भीतर एक गहरा 'ध्वन्यात्मक मौन' (Sonic Silence) निर्मित करता है। यह मौन केवल पात्र की बेबसी नहीं है, बल्कि वह कहानी की भाषा और शिल्प को अत्यधिक सांकेतिक, रूपकात्मक और मनोवैज्ञानिक (Psychological Narrative) बना देता है। यहाँ वृद्ध पात्र कथानक को केवल बाह्य घटनाओं के स्तर पर गति देने के बजाय उसके आंतरिक तनाव को गहराते हैं। उनकी उपस्थिति और मौन संवाद आख्यान-संरचना में एक ऐसे दार्शनिक विमर्श को जन्म देता है, जहाँ पाठक घटनाओं के क्रम से इतर मनुष्य के घटते मूल्यों और उत्तर-आधुनिक यथार्थ की निरर्थकता से साक्षात्कार करता है। इस प्रकार, 'खरगोश' में वृद्ध-उपेक्षा कहानी की संरचना को घटनाप्रधानता से मुक्त कर उसे एक गंभीर वैचारिक और शिल्पीय सघनता प्रदान करती है।

### **अमरकांत की कहानी 'डिप्टी कलेक्टरी': उपेक्षा का करुण-व्यंग्य और कथानक का त्रासद मोड़**

अमरकांत की कहानी 'डिप्टी कलेक्टरी' स्वतंत्रता के पश्चात के निम्न-मध्यमवर्गीय भारतीय परिवार के टूटते सपनों, आर्थिक विषमता और वयोवृद्ध जीवन की त्रासदी का करुण और व्यंग्यात्मक पाठ प्रस्तुत करती है। कहानी के केंद्र में वयोवृद्ध सकलदीप बाबू हैं, जो अपनी समस्त व्यक्तिगत आकांक्षाओं का बलिदान केवल इसलिए कर देते हैं ताकि उनका पुत्र नारायण 'डिप्टी कलेक्टर' बन सके। संपूर्ण कथानक सकलदीप बाबू की इसी एक 'उम्मीद' पर टिका रहता है। किंतु पुत्र के परीक्षा में असफल होने के साथ ही परिवार का सारा उत्साह धाराशायी हो जाता है और घर में एक भयावह मायूसी छा जाती है। सफलता न मिलने पर सकलदीप बाबू की स्थिति घर में एक ऐसे निष्प्रयोज्य वृद्ध की हो जाती है, जिनकी उपयोगिता समाप्त हो चुकी है। परिवार और समाज उनसे वह केंद्रीयता छीन लेता है जो कल तक उनके सपनों पर टिकी थी, और वे धीरे-धीरे मौन तिरस्कार तथा उपेक्षा के चक्रव्यूह में फँस जाते हैं। आख्यान-शास्त्र की दृष्टि से सकलदीप बाबू की यह 'वृद्ध-उपेक्षा' और उसके बाद घटित होने वाली 'उत्तरवर्ती उपेक्षा' ही पूरी कहानी के ढाँचे को गति प्रदान करती है। जब तक पुत्र के परिणाम की प्रतीक्षा रहती है, आख्यान में एक निरंतर कौतूहल और तनाव (Narrative Anticipation & Tension) बना रहता है। परिणाम आने के पश्चात सकलदीप बाबू का मौन आत्म-समर्पण और उनकी उपेक्षा कहानी को अपने त्रासद चरमोत्कर्ष (Tragic Climax) तक पहुँचाती है। यहाँ वृद्ध पात्र केवल एक करुण दृश्य उपस्थित नहीं करता, बल्कि निम्न-मध्यमवर्गीय पारिवारिक यथार्थ की विडंबना को आख्यान के केंद्र में स्थापित कर पूरे कथा-वृत्त को त्रासद परिणति प्रदान करता है।

**उदय प्रकाश की कहानी 'पाल गोमरा का स्कूटर': उत्तर-आधुनिक यथार्थ और प्रतीकात्मक विस्थापन**

भूमंडलीकरण, बाजारवाद और तीव्र उपभोक्तावाद के दौर में वृद्ध-जीवन की दिशाहीनता और पारिवारिक अप्रासंगिकता को उदय प्रकाश की कहानी 'पाल गोमरा का स्कूटर' अत्यंत सूक्ष्मता और रूपकात्मकता के साथ उकेरती है। उदय प्रकाश की कथा-दृष्टि में वृद्धों की उपेक्षा केवल भावनात्मक या व्यक्तिगत स्तर पर घटित होने वाली घटना नहीं है, बल्कि यह एक प्रकार की 'सभ्यतागत और संस्थागत उपेक्षा' (Civilizational & Institutional Marginalization) का रूप ले लेती है। नई तकनीक, बाजार और उपभोक्तावादी संस्कृति से संचालित नई पीढ़ी के लिए वृद्ध का अनुभव, उनका अतीत और उनकी मूल्य-प्रणाली पूरी तरह 'आउटडेटेड' और व्यर्थ हो चुकी है। आख्यान-शिल्प की दृष्टि से इस कहानी में उपेक्षित वृद्ध पात्र और उनकी जर्जर वस्तुएँ उत्तर-आधुनिक यथार्थ के विरुद्ध एक सशक्त 'प्रति-आख्यान' (Counter-Narrative) खड़ा करने वाले मुख्य रूपक (Metaphor) का कार्य करते हैं। कहानी की संरचना पारंपरिक रैखिक (Linear) शैली का पालन करने के बजाय विखंडित और बहुआयामी है। वृद्ध पात्र की उपेक्षा और उनकी स्मृतियों में पलायन कहानी के काल-क्रम को तोड़ता है, जिससे वर्तमान, अतीत और स्मृतियों के बीच एक अनवरत आवाजाही (Non-linear Flashbacks) निर्मित होती है। यहाँ उपेक्षित वृद्ध आख्यान के पारंपरिक ढाँचे को विखंडित करके उसे उत्तर-आधुनिक शिल्पगत गहराई प्रदान करते हैं, जहाँ वृद्ध-उपेक्षा केवल एक पारिवारिक त्रासदी न रहकर संपूर्ण आधुनिक समाज की नैतिक शून्यता का प्रतीक बन जाती है।

**IX. निष्कर्ष**

समकालीन हिंदी कहानी में उपेक्षित वृद्ध पात्रों का आख्यान-शास्त्रीय अध्ययन यह स्थापित करता है कि वृद्ध-उपेक्षा केवल एक सामाजिक या नैतिक कथ (Content) मात्र नहीं है, बल्कि वह कथा-रूप (Form) और आख्यान-संरचना (Plot Architecture) को संचालित करने वाला मुख्य घटक है। कथा-साहित्य में उपेक्षा से उपजा पारिवारिक व पीढ़ियों का अंतर्द्वंद्व कथानक के तनाव (Tension) और गतिशीलता का प्राथमिक उत्प्रेरक बनता है। उषा प्रियंवदा की 'वापसी' से लेकर अमरकांत की 'डिप्टी कलेक्टरी' तक, वृद्धों का 'स्थानिक विस्थापन' (Spatial Displacement)—जैसे उन्हें घर के मुख्य हिस्से से हटाकर गलियारे या कोने में धकेलना—उनके आंतरिक अकेलेपन का सशक्त दृश्य-रूपक बन जाता है। इसके साथ ही, गजाधर बाबू का पुनः लौट जाना या सकलदीप बाबू का मौन आत्म-समर्पण जैसे निर्णय कहानी को एक अनिवार्य संरचनात्मक परिणति (Structural Closure) प्रदान करते हैं। यद्यपि सामाजिक धरातल पर वृद्ध पात्र 'हार्शिए' (Margin) पर धकेल दिए गए हैं, किंतु कथा-शिल्प, व्यंग्य और संवेदना के स्तर पर वे कहानी के 'केंद्र' (Center) में स्थित हैं। यही विरोधाभास समकालीन कहानी के आख्यान-विधान को बहुआयामी

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. जेनेट, जेराड (1983) नैरेटिव डिस्कोर्स: एन एस्से इन मेथड, इथाका: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस
2. प्रियंवदा, उषा (2018) प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन
3. साहनी, भीष्म (2009) प्रतिनिधि कहानियाँ - भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन
4. प्रियंवदा, खरगोश, नई किताब प्रकाशन,
5. अमरकांत, डिप्टी कलेक्टरी
6. प्रकाश, उदय, पाल गोमरा का स्कूटर

7. पांडेय, मैनेजर (2008) साहित्य और समाजशास्त्र की भूमिका. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
8. सेठ, गोविंद (2019) हिंदी कहानी का विकास और वृद्ध-विमर्श